SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

छोटानागपुर के शैक्षणिक विकास में गोस्सनर एंवेजेलिकल मिशन (जी. ई. एल.) का योगदान (1845–2000ई.)

सुनील कुमार वर्मा, शोधार्थी, इतिहास विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
सुनील कुमार वर्मा, शोधार्थी, इतिहास विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग,
झारखण्ड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 21/12/2020
Revised on : -----
Accepted on : 28/12/2020
Plagiarism : 01% on 22/12/2020

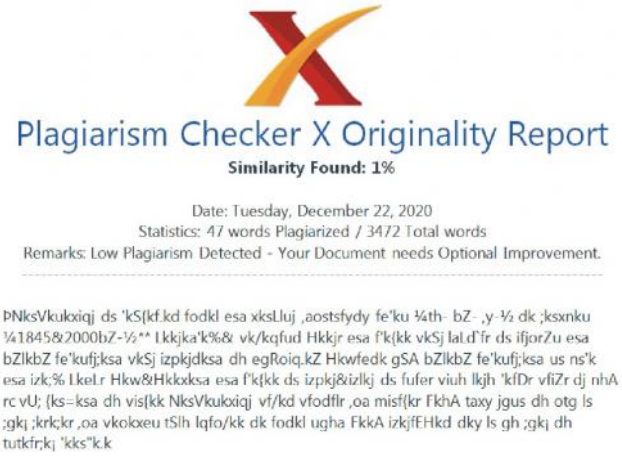
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Tuesday, December 22, 2020
Statistics: 47 words Plagiarized / 3472 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

ÞNksVkukxiqj ds 'kS{kf.kd fodkl esa xksLluj ,aostsfydy fe'ku ¼4th- bZ- ,y-½ dk ;ksxnku ¼1845&2000bZ-½** Lkkjka'k%& vk/kqfud Hkkjr esa f'k{kk vkSj laLd`fr ds ifjorZu esa bZlkbZ fe'kufj;ksa vkSj izpkjdksa dh egRoiq.kZ Hkwfedk gSA bZlkbZ fe'kufj;ksa us ns'k esa izk;% Lkel.r Hkw&Hkkxksa esa f'k{kk ds izpkj&izlkj ds fufer viuh lkjh 'kfDr vfiZr dj nhA rc vU; {ks=ksa dh vis{kk NksVkukxiqj vf/kd vfodflr ,oa misf{kr FkhA taxy jgus dh otg ls ;gkj ;krk;kr ,oa vkokxeu tSlh lqfo/kk dk fodkl ugha FkkA izkjfEHkd dky ls gh ;gkj dh tutkfr;kj 'kks"k.k

शोध सार

आधुनिक भारत में शिक्षा और संस्कृति के परिवर्तन में ईसाई मिशनरियों और प्रचारकों की महत्वपुर्ण भूमिका है। ईसाई मिशनरियों ने देश में प्रायः समस्त भू–भागों में शिक्षा के प्रचार–प्रसार के निमित अपनी सारी शक्ति अर्पित कर दी। तब अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा छोटानागपुर अधिक अविकसित एवं उपेक्षित थी। जंगल रहने की वजह से यहाँ यातायात एवं आवागमन जैसी सुविधा का विकास नहीं था। प्रारम्भिक काल से ही यहाँ की जनजातियाँ शोषण की चक्की में पीसती आ रही थी। इनकी अज्ञानता ओर नासमझी जैसी दोषों से शोषक जातियों ने भरपूर लाभ उठाया। इसी समय 1845 ई. में पहली बार जर्मन ईसाई मिशनरियों का प्रवेश छोटानागपुर मे हुआ। ये ईसाई मिशनरियाँ बहुत मनोयोग और परिश्रम से यहाँ भाषाओं को सीखकर अपने अथक प्रयास द्वारा छोटानागपुर के निवासियों को आधुनिक एवं शिक्षित बनाने का काम किया। छोटानागपुर में इन्होंने आधुनिक शिक्षा के विकास के लिए विद्यालयों, प्रशिक्षण संस्थाओं, तकनीकी संस्थानों, अस्पतालों की स्थापना की। इन मिशनरियों के अथक परिश्रम और निष्ठा के साथ काम किया और छोटानागपुर में ज्ञान की लौ जलायी। अतः छोटानागपुर में शिक्षा के अग्रदूत माने जाते हैं। छोटानागपुर में सर्वप्रथम प्रवेश करने वाली गोस्सनर इवान्जेलिकस लुथरेन मिशन थी। इस मिशन का अस्तित्व की शुरूआत राँची में जर्मन मिशन स्कुल में लडकों और लड़कियों को शिक्षित करने के लिए स्थापित किया गया था। इस मिशन के पुराने रिकॉर्ड का पता नहीं लगाया जा सकता है क्योंकि उन्हें 1914–18 ई0 और 1939–45 ई0 के प्रथम एवं द्वितीय महान विश्वयुद्धों का सामना करना पडा था। उन्हें छोटानागपुर खाली करने के लिए मजबुत किया गया था। रिकार्ड की कोई निश्चित श्रृंखला नहीं थी।

मुख्य शब्द

प्रोटेस्टेन्ट, शैक्षणिक, गोस्सनर, अग्रदूत, एंवेंजेलिकल।।

प्रस्तावना

ईसाई मिशनरियों ने देश में प्रायः समस्त भू–भागों में शिक्षा के प्रचार–प्रसार के निमित अपनी सारी शक्ति अर्पित कर दी। तब अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा छोटानागपुर अधिक अविकसित एवं उपेक्षित थी। जंगल रहने की वजह से यहाँ यातायात एवं आवागमन जैसी सुविधा का विकास नहीं था। प्रारम्भिक काल से ही यहाँ की जनजातियाँ शोषण की चक्की में पीसती आ रही थी। इनकी अज्ञानता ओर नासमझी जैसी दोषों से शोषक जातियों ने भरपूर लाभ उठाया। उच्च वर्ग की जातियों ने इन्हें सदैव उपेक्षित, हेय एवं तुच्छ दृष्टि से देखा तथा उसके रक्त का भरपूर शोषण किया। ब्रिटिश शासनकाल में जमींदारी प्रथा और अंग्रेजों की शोषण पूर्ण आर्थिक नीति के कारण यहाँ के जनजातियों की आर्थिक स्थिति दयनीय होती जा रही थी। इसी समय 1845 ई. में पहली बार जर्मन ईसाई मिशनरियों का प्रवेश छोटानागपुर मे हुआ। उनके आगमन के बाद 19 वी शताब्दी में अन्य ईसाई मिशनों एस. पी. जी. मिशन, रोमन कैथोलिक मिशन, युनाइटेड फ्री चर्च ऑफ स्कॉटलैण्ड एवं डब्लिन युनिवर्सिटी मिशन का आगमन छोटानागपुर में हुआ। इन ईसाई मिशनरियों के द्वारा छोटानागपुर के जनजातियों के बीच पश्चिमी शिक्षा की शुरूआत की गई। छोटानागपुर में 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में आधुनिक शिक्षा का विकास मुख्यतः ईसाई मिशनरियों के प्रयासों के परिणामस्वरूप हुए। ये ईसाई मिशनरियाँ बहुत मनोयोग और परिश्रम से यहाँ भाषाओं को सीखकर अपने अथक प्रयास द्वारा छोटानागपुर के निवासियों को आधुनिक एवं शिक्षित बनाने का काम किया। छोटानागपुर में इन्होंने आधुनिक शिक्षा के विकास के लिए विघ्द्यालयों, प्रशिक्षण संस्थाओं, तकनीकी संस्थानों, अस्पतालों की स्थापना की। इन मिशनरियों के अथक परिश्रम और निष्ठा के साथ काम किया और छोटानागपुर में ज्ञान की लौ जलायी। अतः छोटानागपुर में शिक्षा के अग्रदूत माने जाते हैं।

शोध उद्धेश्य

जी. ई. एल. मिशन के शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में योगदान को उजागर करना तथा विभिन्न स्त्रोतों के आधार पर छोटानागपुर के शिक्षा और संस्कृति के विकास में गोस्सनर मिशन द्वारा किये गये समाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों को उजागर करना।

शोध विधि

मैने इस शोध विधि में विश्लेषणात्मक व्याख्या की है, इसके लिए द्वितीयक स्त्रोत का सहारा लिया हूँ। साथ ही प्रकाशित ग्रंथ, विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में छपे लेख, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध कार्य एवं इंटरनेट का सहारा लिया गया है।

शोध विश्लेषण

छोटानागपुर विभिन्न मिशनों का कार्य–क्षेत्र रहा है फिर भी प्रमुखता और शैक्षिक विकास की दृष्टि से केवल तीन मिशनों का कार्य प्रमुख रहा है। अगर शैक्षिक संस्थानों की परिगणना की जाय तो सर्वाधिक, विद्यालयों की स्थापना रोमन कैथोलिक मिशन ने की है। संख्या की दृष्टि से दुसरा जी.ई.एल. मिशन का है और तीसरा स्थान एस. पी.जी. (सी.एन.आई) मिशन का है। स्टॉकिशटस मिशन के कुछ विद्यालय छोटानागपुर के अन्तर्गत विशेषतः धनबाद क्षेत्र में संचालित हो रहे हैं।

छोटानागपुर में सर्वप्रथम प्रवेश करने वाली गोस्सनर एंवेजेंलिकल लुथरेन मिशन थी। छोटानागपुर में जर्मन ईसाई मिशनरियों को भेजने का श्रेय जी.ई.एल. के संस्थापक रेम. पादरी योहनेस इवांजेलिस्ता गोस्सनर को है। 01 दिसम्बर, 1845 ई. यह मिशन राँची में स्थापित हुई। इस मिशन का अस्तित्व की शुरूआत राँची में जर्मन मिशन स्कुल में लडकों और लड़कियों को शिक्षित करने के लिए स्थापित किया गया था। इस मिशन के पुराने रिकॉर्ड का पता

नहीं लगाया जा सकता है क्योंकि उन्हें 1914–18 ई0 और 1939–45 ई0 के प्रथम एवं द्वितीय महान विश्वयुद्धों का सामना करना पडा था। उन्हें छोटानागपुर खाली करने के लिए मजबूर किया गया था। रिकार्ड की कोई निश्चित श्रृंखला नहीं थी।

जी.ई.एल. मिशन द्वारा किये गऐ छोटानागपुर के शैक्षणिक विकास (1845–2000) ई० के अवधि को निम्नलिखित सात (7) भागों में विभाजित किया गया है:

1. (1845–50 ई0) के दौरान जी.ई.एल. का शैक्षिक विस्तार।
2. (1850–1857 ई0) के दौरान शिक्षा का विस्तार।
3. (1857–70 ई0) के दौरान शैक्षिक विस्तार।
4. (1870–95 ई0) के दौरान शैक्षिक विस्तार।
5. (1895–1915 ई0) शिक्षा का विकास।
6. (1915–1947 ई0) शिक्षा का विस्तार।
7. (1947–2000 ई०) शैक्षिक विकास ।

1. (1845–50 ई0) के दौरान जी.ई.एल. का शैक्षिक विस्तार

1846 ई० की शुरूआत में अकाल भुखमरी से बचाए गए कुछ अनाथों को मजिस्ट्रेट द्वारा उसके पास भेजा गया था। इन मैजिस्ट्रेटों ने उन्हें लाना शुरू कर दिया और इसने उसे कुछ व्यवसाय से सुसज्जित किया। इन अनाथों ने स्कूल के संवादों का गठन किया। उन्हें 1846 ई. में बपतिस्मा दिया गया था और क्रिश्चियन नाम उन्हें थामस (बढ़ई), जॉन (कम्पाउंडर), प्रभुदयाल और लड़की का नाम मैरी के रूप में दिया गया था। स्कूल शुरू करके उन्होंने दिन के समय में बच्चों को एकत्र किया और शाम को व्यस्क इकट्ठे हुए। वहाँ उन्हें वर्णमाला सिखाई गई, बाईबिल की कहानियाँ बताई गई, और उपदेश नियमित रूप से दिये गए। मिशनरियों को थोड़ी बहुत हिन्दी आती थी, इसलिए राँची मे अपने घरों का निर्माण पुरा करने के बाद, उन्होंने एक स्कूल शुरू किया, क्योंकि वे अनुभवी शिक्षक थे। उन्होंने बच्चों को शिक्षित करने के लिए स्कूल में भर्ती कराया। 1847 ई० में तीन अन्य मिशनरी बर्लिन से राँची आए और राँची के निकट डोम्बा नामक स्थान पर अपना केन्द्र स्थापित किए। ये मिशनरियाँ गांवों में जाकर एवं बाजारों में लोगों को ईसाई धर्म के बारे में बतलाते, दवाइयाँ देते और बच्चों को स्कूल जाने के लिए प्रोत्साहित करते थे। 1848 ई० में कुछ अन्य मिशनरियाँ जर्मनी से पुनः राँची आये। ये अनाथ बच्चों को अपने साथ रखते थे और वे ही बच्चे रोज स्कूल में उपस्थित होते थे। 1845–1850 ई० के बीच रेभ. गोस्सनर ने अन्य 19 व्यक्तियों और दो महिलाओं को मिशन कार्य हेतु छोटानागपुर भेजा। इस प्रकार इस मिशन के द्वारा 1846 ई० में राँची, 1847 ई० में डोम्बा, 1848 ई० में लोहरदगा और 1850 ई० में गोविन्दपुर में इस मिशन के द्वारा मिशन केन्द्र एवं प्राथमिक स्कूल की स्थापना की गई। काफी लम्बे समय के प्रयास के बाद 09 जून 1850 ई० की चार उराँव जनजाति के लोगों ने इस मिशन में बपतिस्प्पा ग्रहण किया।

2. (1850–1857 ई0) के दौरान शिक्षा का विस्तार

1851 ई० में इस मिशन के द्वारा चाइबासा में स्कूल आरंभ किया गया। 1859 ई० में हजारीबाग में स्कूल खोला गया। 1853 ई० तक इस मिशन का मुख्यालय राँची था किन्तु 1854 ई० में हजारीबाग में भी एक मुख्यालय स्थापित किया गया। 1852 ई० में राँची स्कूल में 28 लड़के और 14 लड़कियाँ थी। 1854 ई0 में इसमें 48 लड़के और 25 लड़कियाँ थी, जिन्हें बाइबिल की कहानियों के अक्षर, गायन और गणित सिखाया जाता था। लड़के और लड़कियाँ अलग–अलग आवास में रहते थे, लेकिन उन्हें एक ही स्थान पर शिक्षित किया जाता था। दक्षिण पश्चिम डिविजन एच. एल. हैरिसन के स्कूलों के निरीक्षकों ने इस प्रकार उल्लेख किया, "मिशन की स्थापना के तुरंत बाद राँची में लड़कों और लड़कियों के लिए क्रमशः दो बोर्डिंग स्कूल स्थापित किये गए थे। मिशन ने ईसाई धर्म का प्रचार–प्रसार किया। मिशन के बारे में अलग–अलग गाँवों

में खबर फैल गई। जमींदार भयभीत थे, इन्होंने क्रिश्चियनों को सताना शुरू किया, लेकिन राँची में आंदोलन नहीं रूका। मिशनरियों ने खुद उन गांवों का दौरा किया। 1855 ई० के अंत तक धर्मांतरित लोगों की सं०–400 से अधिक हो गई। भाषा से संबंधित गंभीर प्रश्न था आदिवासियों के पास कोई लिखित भाषा नही थी। मिशनरियों ने सही मायने में हिन्दी भाषा सीखना शुरू किया, जो निःसंदेह कई लोगों द्वारा समझा जाता था।

1857 ई० में सिपाही विद्रोह के कारण शिक्षा की प्रगति को काफी धक्का पहुँचा। विद्रोह के दौरान राँची का मिशन परिसर, स्कुल एवं चर्च नष्ट कर दिए गए। अतः यहाँ काम करने वाले सभी मिशनरी 31 जुलाई 1857 ई० छोटानागपुर वापस कलकत्ता चले गए। पुनः 1857 ई० के विद्रोह के पश्चात् जनजीवन शांत होने पर ये मिशनरियाँ छोटानागपुर वापस लौट गए।

3. (1857–1870) ई० के दौरान शिक्षा का विकास

30 मार्च, 1858 ई० को रेभ. गोस्सनर की मृत्यु हो गई। मृत्यु के पूर्व रेभ. गोस्सनर ने छोटानागपुर में काम करने के लिए जर्मन–मिशनरियों का एक बोर्ड गठित किया था। अब मिशनरी इस बोर्ड के निर्देश अनुसार काम करने लगे। 1859 ई० में इस मिशन द्वारा स्कूल खोलने के कई रेगुलेशन या अधिनियम बनाए गए। 1863 ई० में इस मिशन की कई केन्द्र खुल चुकी थी। 1861 ई० तक छोटानागपुर के कई क्षेत्रों में 11 विद्यालय की स्थापना करने में सफल रहे। 1857 ई० में स्कुल निरीक्षक हैरीसन ने राँची स्थित मिशन स्कूल का दौरा किया। वहाँ उसने तीन धर्मप्रचारकों एवं 100 छात्र–छात्राओं को देखा। ये सभी धर्मांतरित ईसाई थे। उन विद्यार्थियों को अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, भूगोल, अंकगणित, संगीत एवं धर्मशास्त्र पढ़ाया जाता था। छात्रों को लौह का काम, काष्ठकला तथा कुम्भकारी भी सिखलाई जाती थी। स्कूल भवन एक बड़ा क्लासरूम था जिसमे पुस्तकें रखने एवं मानचित्र टाँगने की व्यवस्था थी। इसके पश्चात् इन मिशनरियों द्वारा यह निर्णय लिया गया कि जहाँ 20 ईसाई परिवार हो वैसे ही स्थानों में स्कूल खोला जाय। 1863 ई० में पुरूलिया में इसका केन्द स्थापित हुआ। 1864 ई० में राँची के निकट इटकी में इस मिशन के द्वारा चर्च एवं स्कूल की स्थापना की गई। 1867 ई० में पोडाहाट में एवं 1869 ई० में बुडजू में स्कूल खोला गया। ये मिशनरी हिन्दी, मुण्डारी, उराँव (कुडूख), संथाली एवं बांग्ला भाषा सीखकर लोगों से बातचीत करते थे। 1862 ई० में हजारीबाग के स्कूल में 23 विद्यार्थी थे। राँची के स्कूल में रेम. फलैक्स की देखरेख में 04 कक्षाएँ चलती थी, जिसमें विद्यार्थियों की संख्या 62 थी। भारत सरकार ने उन स्कूलों की सहायता के लिए छोटानागपुर के कमिश्नर की 50 रू. अनुदान दिया था। 1864 ई. में 11 ग्रामीण स्कूल थे जिसमें 270 विद्यार्थी थे 30 जनवरी 1864 ई. को जी. ई.एल. थियोसोफिकल कॉलेज खोला गया, जिसमें 15 विद्यार्थी थे। 1865 ई० में इस मिशन के 08 स्कूलों में 115 लड़के और 35 लड़कियाँ पढ़ती थी। उस वर्ष भारत सरकार ने शिक्षा निदेशक की अनुरोध पर 66 रू. अनुदान इस मिशन को दिया। उस समय एक ग्रामीण स्कूल के निर्माण मे 250 रू. खर्च होते थे। शिक्षकों का सलाना वेतन 200 रू. था। 1869 ई० के जी.ई.एल मिशन के वार्षिक रिर्पोट के अनुसार 1869 ई० में राँची के बोर्डिंग स्कूल का विस्तार हुआ, जिसमें 150 लड़के और 50 लड़कियाँ थी। लड़कियों का पाठ्यक्रमों के साथ–साथ कताई–बुनाई और पकवान भी सिखलायी जाते थे। लड़कियों की देखभाल के लिए दो शिक्षिकाओं को रखा गया था। लड़कों को सातवीं कक्षा तक के लिए सात शिक्षक थे। इस स्कूल के लिए सरकार की तरफ से 50 रू. का अनुदान दिया जाता था। लड़कों को इतिहास, भूगोल, चित्रांकन और संगीत भी सिखलाया जाता था। तत्कालिन कमिश्नर ई. टी. डाल्टन के सिफारिश के बाद इन स्कूलों को सरकार द्वारा अनुदान मिलने लगा। इन स्कूलों में चौथी कक्षा से अंग्रेजी भाषा की पढ़ाई आरंभ की जाती थी। कानून की जानकारी के लिए कैथी भाषा भी सिखलाया जाता था।

1869 ई० में सिंहभूम के चाईबासा में एक आवासीय विद्यालय खोला गया, जहाँ यूरोपीय संचालक और दो भारतीय शिक्षक थे। सिंहभूम में इस मिशन के द्वारा खोले गए कुछ ग्रामीण स्कूल भी थे।

4. (1870–1895 ई०) के दौरान शैक्षिक विस्तार

1871–72 ई० में राँची में छात्र–छात्राओं के लिए अलग आवासीय विद्यालय की स्थापना की गई, सभी शिक्षक ईसाई थे, केवल अंग्रेजी और हिन्दी पढ़ाने के लिए एक बंगाली और पंडित थे। 1872 ई० तक विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा दी गई, किन्तु 1873 ई० में विद्यार्थियों से शुल्क लिया जाने लगा, इस पर कुछ विद्यार्थी विद्यालय छोड़ दिये। अतः 1874 ई० में निर्धन तथा अनाथ बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की गई। राँची का आवासीय विद्यालय इस मिशन का श्रेष्ठ स्कूल था। 1871–72 ई० में यह विद्यालय कक्षा सात तक था जिसमें 110 विद्यार्थी थे। 1873 ई० में उन विद्यार्थियों की संख्या 123 हो गई। जहाँ 7 ईसाई शिक्षक थे। कुछ विद्यार्थी कुछ दिनों तक पढ़ाई करके स्कूल छोड़ देते थे। तेज विद्यार्थी उत्तीर्ण होकर ऊँची कक्षा में चले जाते थे और अच्छी शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। जी. ई. एल. मिशन की 1874 ई० के वार्षिक रिर्पोट के अनुसार "राँची के स्कूल के अलावा पूरे जिले में 62 ग्रामीण स्कूल थे जिसमें 1314 बच्चे पढ़ते थे। उसी तरह 1874 ई० में चाईबासा में एक बोर्डिंग स्कूल और 9 ग्रामीण स्कूल थे जिसमें 366 बच्चे पढ़ते थे। पुरूलिया के बोर्डिंग स्कूल में 112 विद्यार्थी थे और 3 शिक्षक थे, चाईबासा के बोर्डिंग स्कूल में 52 छात्र थे।"

श्लैक रिर्पोट के अनुसार अंगलिंकन और बर्लिन मिशन द्वारा ये बड़े काम किये जा रहे थे। उनके द्वारा खोले गए 52 स्कूल थे जिसमें 1299 छात्र और 363 छात्राएँ पढ़ती थी। कुल खर्च 10,053 था, जिसमें सरकार ने 2360 रू. दिये थे।

जी.ई.एल. मिशन के द्वारा 1873 ई० में राँची में एक स्टोन लियोग्राफिक प्रेस खोला गया जो 1882 ई० में एक छापाखाना के रूप में परिवर्तित हुआ। 1877 ई. में इस मिशन के द्वारा हिन्दी पाक्षिक पत्रिका 'घर–बन्धु' निकाली जाने लगी, जो छापखाने में छपती थी।

1874 ई० में भारत के वायसराय नोर्थब्रुक राँची के बोर्डिंग स्कूल को देखने आए और प्रसन्नता प्रकट की थी। उन्होंने स्कूल के लिए 50 रू. दिये और महारानी विक्टोरिया का एक चित्र स्कूल के लिए दिया था। राँची के इस बोर्डिंग स्कूल को 1884 ई० में मिडिल–वर्नाकुलर स्कूल में प्रौन्नति दी गई।

5. (1895–1915ई.) के दौरान शैक्षिक विस्तार

इस अवधि में भारत में शिक्षा का विकास बहुत अधिक हुआ। गोस्सनर उच्च विद्यालय वर्ष 1895 ई० शुरू किया गया था और इसे कलकत्ता विश्वविद्यालय से मान्यता दिया गया था। क्रिश्चियन के अलावा इस विद्यालय में हिन्दू, मुस्लिम लड़की को भी प्रवेश दिया गया था। छोटानागपुर के तत्कालीन इन्स्पेक्टर कनिंघम ने इसे ''मॉडल स्कूल'' माना। उस स्कूल में उस समय यूनानी, फारसी, संस्कृत के अलावा अंग्रेजी शिक्षण पर जोर दिया गया था। 1905 ई० में 91 लड़के थे जो 1914 ई० तक 250 से अधिक बालक हो गये। 150 बोर्डिंग हाऊस बनाने के लिए 22000 रू. की लागत से बोर्डिंग हाऊस का निर्माण किया गया। यह औपचारिक रूप से 10 जुलाई 1916 ई० को खोला गया।प्रथम विश्वयुद्ध के प्रकोप से पहले गोस्सरन मिशन में 295 स्कूल तथा 8223 विद्यार्थी थे। होलस्टोन के अनुसार ''10 बोर्डिंग स्कूल में 564 बच्चे थे।''1911 ई० में चाईबासा में 171 बालक थे। 1907ई० में एक बालिका विद्यालय खोला गया जिसमें 30 बालिका थी। 1903 ई० में मुंडारी अंग्रेजी शब्दकोश का एक संशोधित और विस्तृत संस्करण प्रकाशित हुआ। इस मिशन के द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से प्रचार–प्रसार किया जाने लगा।

1896 ई० के अंत तक में 80 उच्च प्राथमिक और 86 ग्रामीण स्कूल थे तथा विद्यार्थियों की संख्या 2315 थी। जनजातीय समाज में जीविकोपार्जन को मजबूत बनाने के लिए महिलाओं के लिए पहला लेस स्कूल 1906 ई० में खोला गया। 1908 ई० में इस मिशन के द्वारा लोहरदगा में अस्पताल का निर्माण किया गया। 1909 ई० में इस मिशन के द्वारा चलाये जाने वाले स्कूलों में शिक्षिकाओं की संख्या 24 थी।

6. (1915–1947 ई०) के दौरान शैक्षिक विस्तार

1921 ई० में गोस्सनर मिशन द्वारा चलाये जाने वाले स्कूलों में एक हाई स्कूल, 6 मिडिल स्कूल और 208

प्राइमरी स्कूल थे जिसमें लडकों की संख्या 4764 एवं लड़कियों की संख्या 1483 थी, कुल विद्यार्थियों की संख्या 6247 थी, चर्च की आर्थिक स्थिति सही नहीं होने के कारण अधिकारियों ने ग्रामीण स्कूलों को दिये जाने वाली राशि को कम कर दिया, जिससे स्थिति खराब होती चली गई। कुछ स्कूलों को जिला बोर्ड को सौंप दी जाने लगी। पादरियों की सिफारिश पर सरकार द्वारा शिक्षकों की नियुक्ति की जाने लगी। 1932 ई० में वित्तीय कारणों से मिशन के 96 विद्यालय को जिला बोर्ड को सौंप दिया गया। 1939 ई० में गोस्सनर चर्च में एक हाई स्कूल, 6 मिडिल स्कूल और 160 प्राइमरी स्कूल थे। वर्ष 1942 ई० में द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान दो हाई स्कूल, 9 मिडिल स्कूल और 109 प्राइमरी स्कूल थे, जिसने 2257 लड़के व 423 लडकियाँ थी। लड़के और लड़कियों को नियमित पाठ्यक्रम के अलावा घरेलू विज्ञान भी पढ़ाया जाता था।

द्वितीय विश्वयुद्ध से पहले गुमला में एक तविता स्कूल खोला गया था, इस विद्यालय को 1945 ई० में अंततः गोविन्दपुर में स्थानांतरित कर दिया। गोस्सनर मिशन द्वारा छोटानागपुर के आदिवासी निवासियों को स्कूल शिक्षा के द्वारा कई लाभों के साथ–साथ रोजगार की संभावना भी बढ़ाया गया। स्थानीय निवासियों को उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजा जाता था। Rev. J. Lakra अमेरिका के शिकागो लुथेरन मदरसा में चार साल के लिए एक मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण के लिए गए थे।

श्रीमती डी. एम. पन्ना मेजिस्ट्रेट बनने वाली पहली स्नातक आदिवासी महिला थी। कुछ छात्र आगरा के मेडिकल कॉलेज में उन्नत चिकित्सा शिक्षा में शामिल हुए। महिला को सार्वजनिक कार्यों के लिए प्रशिक्षित करने के लिए महिला समिति शुरू की गई।

7. (1947–2000 ई०) के दौरान शैक्षणिक विकास

वर्ष 1920ई० में गोस्सनर मिशन ने 75वें वर्ष के उपलक्ष्य में डायमण्ड जुबली मनाया। जिसके प्रेसिडेन्ट रॉब एच.डी. लकडा थे। लोग चाहते थे कि स्थानीय पादरी ही चर्च का नियंत्रण करें। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद मिशनरियों ने छोटानागपुर छोड़ दिया। मिशनरियों ने यह महसूस किया कि स्थानीय पादरियों को ज्यादा शक्ति देनी चाहिए, इस उद्देश्य के लिए थियोलोजिकल सेमिनार को पुनः शुरू किया।

दिनांक 2 नवम्बर 1948 ई० को चर्च तथा बर्लिन होमबोर्ड के बीच समझौता खत्म हो गया। कुछ नियम पारित किये गए, जिसके अनुसार मिशनरी किसी भी विभाग का न तो प्रभारी हो सकता था और न ही वह कोई कार्यकारी शक्ति अपने पास रखेगा। एक मिशनरी महासभा के आमंत्रण पर बैठ तो सकता है, परन्तु वोट नहीं दे सकता। इसी शर्त के साथ गोस्सनर मिशन 1947 ई० क कार्य करता रहा।

ऐसा प्रतीत होता है कि रिकॉर्डों को भारतीय पादरियों के द्वारा 1936 के बाद ही सुरक्षित रखा जाने लगा। गेवरॉन के अनुसार 1936 ई० में छोटानागपुर के लुथेरनो की संख्या 1,36,000 थी।

सन् 1963 की पंजिका के अनुसार 1947 ई० में 1,64,474 धर्मन्तरित क्रिश्चियन थे। उनकी सेवा में 79 पादरी तथा 613 प्रचारक लगे थे। 1852 ई० में स्वीकृत बेथेसदा बालिका प्राथमिक विद्यालय को 1947ई० में उच्च विद्यालय की कक्षाओं से जोड दिया गया। 1952 ई० में गोस्सनर महाशय का जीवन वृतांत एवं मार्टिन लूथर का जीवन चरित्र गोस्सनर मिशन द्वारा लिखा गया। राँची जिले के अंतर्गत 1966 ई० में गोस्सनर मिशन के 149 प्राथमिक विद्यालय 25 माध्यमिक विद्यालय शिक्षण कार्य में संलग्न थे। 1971ई० में राँची में एक गोस्सनर महाविद्यालय की स्थापना की गई जो राँची विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है। 1973 ई० में राँची जिले के अन्तर्गत गोस्सनर मिशन के 10 स्वीकृत उच्च विद्यालय संचालित हो रहे थे।

निष्कर्ष

छोटानागपुर के जनजातीय क्षेत्र में औपचारिक शिक्षा का शुभारंभ गोस्सनर एंवेजेलिकल ल्युथरेन चर्च मिशन द्वारा दिया गया। गोस्सनर मिशन के अथक एवं अनवरत परिश्रम के परिणामस्वरूप् छोटानागपुर को विशेषतः आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक प्रगति संभव हो सकी। विदित है कि गोस्सनर मिशन के प्रवेश काल में

इस क्षेत्र के लोग परिचमी ज्ञान से अविकसित थे लेकिन आज छोटानागपुर पुर्व की अपेक्षा सभी दृष्टिकोण से समुन्नत एवं विकसित हो गया है। गोस्सनर मिशन छोटानागपुर के शैक्षिक विकास की दृष्टि से दुसरा मिशन है। इस मिशन का अस्तित्व की शुरूआत राँची में जर्मन मिशन स्कूल की स्थापना के साथ की गई। जगह–जगह विद्यालय, चिकित्सालय एवं गिरिजाघर का निर्माण किया गया। शैक्षणिक विकास के लिए मिशन के समक्ष महत्वपूर्ण प्रश्न था कि किस प्रकार की शिक्षा दी जाय–धर्मनिरपेक्ष या धर्मोपदेशक। शिक्षा के माध्यम से उन्हें क्रिश्चियन धर्म की मजबूती प्रदान करना था तथा धर्मांतरितों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को सृदृढ़ करना था। ईसाई मत ने छोटानागपुर के लगभग 20 रू. आदिवासी को अपने प्रभाव में लाया। ईसाई मिशनरियों ने शिक्षा तथा अन्य कल्याणकारी योजनाओं के द्वारा ईसाई आदिवासियों की काफी सेवा की। आदिवासियों के आधुनिकीकरण में इन ईसाई मिशनरियों की भूमिका सराहनीय रही।

इस प्रकार गोस्सनर मिशन के प्रभाव से जनजातिय संस्कृति के विकास के अच्छे लक्ष्ण दिखाई पडते हैं। शिक्षा ने प्रगति, अंधविश्वास में कमी, रहन–सहन, वेश–भूषा में आधुनिकता, खान–पान में परिवर्तन तथा पर्व–त्यौहारों की भी समारोहित करने में परिष्कार हुआ है। इससे जनजातियों ने अपने प्रति प्रतिष्ठा और स्वाभीमान का भाव जागृत हुआ है। गोस्सनर मिशन ने जिस निःस्वार्थ तत्परता के साथ छोटानागपुर के निवासियों को उपकृत किया है, इस उपकार के लिए यहाँ के सम्पूर्णवासी इन मिशनरियों का चिर ऋणी है।

संदर्भ सूची

1. ई. वीरते, (1988), *छोटानागपुर का मसीही मंडली का इतिहास,* जी.ई.एल. चर्च के डायरेक्टर सी.के. पॉल सिंह द्वारा प्रकाशित, राँची (पाँचवां संस्करण), पृष्ठ–03।
2. ई. मुलर, (1908), *मण्डली वृतांत,* जी.ई.एल. मिशन प्रेस, राँची, पृष्ठ–44।.
3. एस. महतो, (1971), *हण्डरेड इयर्स ऑफ क्रिश्चियन मिशन्स इन छोटानागपुर सिन्स, 1845,* छोटानागपुर क्रिश्चियन पब्लिसिंग हाऊस, राँची, पृष्ठ–30।
4. वी. वीरोत्तम, (2017), *झारखण्डः इतिहास एवं संस्कृति,* बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना (सप्तम संस्करण), पृष्ठ–565।
5. खलखो, आभा, (2015), *ब्रिटिश कालीनझारखण्ड के कुछ ऐतिहासिक अध्याय,* जेवियर पब्लिकेशन्स, पुरूलिया रोड, राँची, पृष्ठ–16–17।
6. अय्यर, चौटर्टन, (1901), *ए स्टोरी ऑफ फिफ्टी इयर्स मिशन वर्क इन छोटानागपुर,* पृष्ठ–22।
7. राय, कामना, (2016), *छोटानागपुर की जनजातीय संस्कृति व समाज,* इंस्टीट्यूट फॉर सोशल डेवलपमेंट एण्ड रिसर्च, राँची, पृ०–208।
8. सिंह, सुनील कुमार, (2015), *झारखण्ड परिदृश्य,* क्राउन पब्लिकेशन्स, राँची।
9. खलखो, आभा, (2010), *हिस्ट्री ऑफ एजूकेशन इन झारखण्ड (1845–1947),* एस.के. पब्लिशिंग कंपनी, राँची, पृ०–54–55।
10. केसरी, वी.पी., (2009), *छोटानागपुर का इतिहास : कुछ सूत्र,* कुछ संदर्भ, नागपुरी संस्करण, राँची।
11. होरो, पी.सी., (2014), *क्रिश्चियन मिशन्स ऑफ बिहार एण्ड झारखण्ड हिल 1947,* क्रिश्चियन वर्ल्ड इमप्रिंट, दिल्ली, पृष्ठ–90।
12. राय एस.सी, (1912), *मुण्डाज एण्ड देयर कण्ट्री,* सिटी बुक सोसाइटी, कलकत्ता, पृष्ठ–254।

13. सिंह, नागेश्वर, (1985), *हिन्दी शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र मे ईसाई मिशनरियों का योग,* पुस्तक लोक, राँची, पृष्ठ–141.।

14. कुशालमय शीतल, (2008), *छोटानागपुर का कलीसिया का वृतांत (1844–90),* एन.सी. आई. टैक्सट बुक सोसायटी, इलाहाबाद, पृ०–05.।

15. वर्मा, उमेश कुमार, (2009), *झारखण्ड का जनजातीय समाज,* सुबोध ग्रंथालय, राँची पृ०–131.।

16. www.christianmissionindia.org/index.Php

17. www.christinanity-in-Bihar.htm

18. Bengal GazZetter; Calcutta, (1910), feudatory state of orrisa.

****